गुण्डीचा मंदिर/ब्रह्मलोक/जनकपुरी

कलिंग स्थापत्य एवं मूर्ति कला का बेजोड़ उदाहरण है गुण्डीचा मंदिर। कुल लगभग 5 एकड़ में फैले हरेभरे बाग–बगीचों के अनादिकाल से निर्मित इस मंदिर में भगवान जगन्नाथ 9 दिनों विश्राम करते हैं। मंदिर का निर्माण ठीक उसी प्रकार से किया गया है जैसाकि श्रीमंदिर का। मंदिर का सबसे पिछला हिस्सा विमान,उसके अन्दर का जगमोहन,उसके बाद नाट्यमण्डप और फिर भोग मण्डप है। भगवान जगन्नाथ अपने इस जन्मस्थली पर इस वर्ष 23जून को आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को अपनी गुण्डीचा यात्रा के क्रम में स्थारुढ़ होकर यहां पर पधारेंगे।गुण्डीचा मंदिर में ही एक समय में मालवा नरेश इंद्रद्युम्न की इच्छानुसार उनकी महारानी गुण्डीचा के नाम पर विश्वकर्मा भगवान द्वारा दारुब्रह्म जगन्नाथ का महावेदी पर निर्माण किया गया था। यहां की रत्नवेदी 4फीट ऊंची और 19फीट लंबी है। मंदिर के आसपास का पवित्र क्षेत्र श्रद्धाबाली कहलाता है जहां की बालुका राशि के कण–कण में श्रद्धा है। यहीं पर राजा इन्द्रद्युम्न ने एक हजार अश्वमेध यज्ञ किया था। इसे सुंदराचल भी कहा जाता है। यह मंदिर हल्के भूरे रंग का है।मंदिर के अन्दर रत्नवेदी पर देव विग्रहों को आरुढ़ कराकर उनकी पूजा–अर्चना की जाती है। यह मंदिर मनोरम उद्यान से घिरा है।मंदिर के अन्दर सात दिनों तक मनाये जानेवाले महोत्सव को गुण्डीचा महोत्सव कहा जाता है।

प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय